गर्मी के दोहे:

रेगमाल सी लू लगे....

सूरज बदला ले रहा, गरमी करे प्रहार ।
धूप हुई बैरिन बड़ी, छांव बांटती प्यार।।

नदिया सूखी नार सी, पोखर हैं बेहाल ।
बादल खाली घूमते , फिरें बजाते गाल ।।

पानी 'पानी' पा रहा, पानी-पानी प्राण ।
किरणें ऐसे बींधती , तन बींधें ज्यों बाण ।।

फ़ाके से बुढ़िया मरी, गरमी मरें जवान ।
बनिया मंदी से मरे , सूखा मरे किसान ।।

रेगमाल सी लू लगे, घिस-घिस छिले खाल,
गर्मी में गर्मी बड़ी, उबलें नदियां, ताल ।

'बादल' अब बा-दल चलें, धरती रही पुकार ।
या तो मौला बरखा दे, या ले - ले अब प्राण ।।

डॉ घनश्याम बादल